गाँव वाले जगपाल की फसल देखकर ट्रेक्टर की फायदामन्दी समझ चुके थे, अब वह भी अपने खेतों को हल की बजाय ट्रेक्टर से जोतने की तरकीब लड़ाने लगे थे। जब यह ख़बर जगपाल तक पहुंची तो उसे अपने बेकार होते ट्रेक्टर का उपयोग अथवा आमदनी का रास्ता दिखाई देने लगा अत: मौक़ा को ग़नीमत जान कर झट किराये पर ट्रेक्टर से खेतों को जोतने का प्रस्ताव रख दिया। गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई, फिर क्या था एक–एक करके खेत ट्रेक्टर से जोता जाने लगा और घन्टों का काम मिनटों में होने

न जाने कैसे यह बात ठाकुर साहब के कानों तक पहुंच गई, वह सुनते ही आगबबूला हो गए ''उस की ई मजाल'' फिर आव देखा न ताव झट खेत जा पहुंचे और किसी अल्हड़ कुमारी की भांति झूमती-इठलाती फसलों को क्रोध की अग्नि दिखा दी और खड़ी फसल देखते ही देखते जल के स्वाहा हो गई। जगपाल पिता का तेवर जानता था इस लिए चुप्पी साधे रहने ही में भलाई जाना।

गाँव वाले जगपाल की फसल देखकर ट्रेक्टर की फायदामन्दी समझ चुके थे, अब वह भी अपने खेतों को हल की बजाय ट्रेक्टर से जोतने की तरकीब लड़ाने लगे थे। जब यह ख़बर जगपाल तक पहुंची तो उसे अपने बेकार होते ट्रेक्टर का उपयोग अथवा आमदनी का रास्ता दिखाई देने लगा अतः मौक़ा को ग़नीमत जान कर झट किराये पर ट्रेक्टर से खेतों को जोतने का प्रस्ताव रख दिया। गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई, फिर क्या था एक-एक करके खेत ट्रेक्टर से जोता जाने लगा और घन्टों का काम मिनटों में होने लगा। इस से लोगों को इतनी आसानी मिली कि धीरे-धीरे सभी ने हल से खेत जोतना छोड़ दिया और ट्रेक्टर से जोतने के लिए जगपाल से सम्पर्क साधने लगे। इधर मज़दूर हलजोतों ने भी ट्रेक्टर की आवश्यक्ता को महसूस किया और वह भी मशीनी युग की क़तार में आ खड़े हुए। बहरहाल जगपाल का काम इस हद तक बढ़ गया कि उसे भोजन तक के लिए फुरसत न मिलती, जबकि वह ट्रेक्टर का किराया दुगुना और राशि पेशगी लेने लगा था, बावजूद इसके काम समय पर नहीं हो पाता था। लोग खेतों को सींच कर जोताई के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा करते।

जोखू हलजोते के बेटे बलिया ने भी अपना खेत जोतने हेतु पेशगी राशि जमा की थी, किन्तु उसकी बारी आती ही न थी। जो भी दिन उसके लिए तै होता उस दिन ट्रेक्टर किसी और के खेत में चलता, इस प्रकार तीन मरतबा खेत सींचने के बाद सूख चुके थे, चौथी दफा भी जब ऐसा ही हुआ तो उसे क्रोध आ गया और वह जगपाल को खोजता हवेली पहुंच गया। इन दिनों ठाकुर साहब बीमार थे, जगपाल उनकी देख-रेख और सेवा में लीन था। बलिया उसे पुकारता बेधड़क हवेली में घुस गया। उसे देखते ही जगपाल चौंक पड़ा फिर झट पिता की ओर देखा, उनके मुख पर घृणा व क्रोध की रेखायें फैलने तथा सुकड़ने लगी थीं। वह झट बलिया का गट्टा पकड़ उसे बाहर ले जाने के लिए खींचने लगा, किन्तु बलिया टस से मस न हुआ, अंगद के पाँव के भांति उसके भी पाँव धरती पर जमे रहे। जगपाल में इतना बल कहाँ था जो वह बलिया की काठी हिला देता, आख़िर थक कर उसकी खुशामद करने लगा.....पिता की बिमारी की दुहाई देते हुए उसे बहलाने-फुसलाने लगा परन्तु बलिया ने उसकी एक न सुनी, बस बार-बार वह एक ही वाक्य कहता ''चाहे जो हो छोटके ठाकुर, आज हमार खेत जोताय चाही ठाकुर साहब हैरान थे कि माजरा क्या है ?'' उनकी आँखों में विस्मय की छाया लहराने लगी थी और माथे की रेखायें प्रश्नचिन्ह का रुप धारण कर रही थीं। जगपाल पिता की भीतरी अवस्था ताड़ गया था, किन्तु करता भी तो क्या ? इस समय उसकी हालत साँप के मुंह में छछुन्दर जैसी थी, न उगलते बनती थी न निगलते। वह जब चिरौरी-विनती के बावजूद भी वहाँ से न टला तो जगपाल के भीतर का क्षत्रीय खून खौल उठा और वह ठकुरई धौंस जमाते हुए शेर की भांति दहाड़ा ''अब तोरी भलमनसी यही में है कि झट-पट निकल जा यहां से।''

''नाही तो का करोगे ?'' बलिया की भी तेवरी चढ़ गई।

''पटक के लगब तोड़ै, हरमजादा कहीं का, बीस दफे कह चुके कि बाबा का जी अच्छा नाही त समझ में नही आवत.....चल जा, कल परसों तक तोर खेत जोता जाई''

इतना सुनते ही बलिया ने लपक कर उसका टेटुवा पकड़ लिया और आँखों में आँखें गाड़ के बोला ''ख़बरदार जो अब गरियाए.....माई कसम तालू से जीभ खींच लेब.....अरे खेत सींचे में रुपया लागत है रुपया !.....हमरे रुपया हराम का नही आवत, कान खोल के सुन लेयो, आज चाहे जो हो हमार खेत जोताये चाही.....चाहे ठाकुर जियें या मरें''

यह सुनते ही जगपाल के पैरों तले से ज़मीन सरकती मालूम होने लगी, उधर ठाकुर साहब क्रोधित हो बिस्तर से उठने का प्रयास कर रहे थे कि धम से गिर पड़े और उनकी आँखों के आगे जोखू हलजोते का चेहरा नाचने लगा। ■